Volume IV, Perspectives - A Peer-Reviewed, Bilingual, Interdisciplinary E-Journal
https://perspectives-jdmc.in/
eISSN – 2583 4762

शहर और नदी: चम्पा 'नदी'-'नाला' का द्वंद्व (भागलपुर, बिहार)

डॉ. रुचि श्री
सहायक प्राध्यापिका
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय (बिहार)

शहर और नदी: चम्पा 'नदी'-'नाला' का द्वंद्व (भागलपुर, बिहार)

चंपानगर, बिहार के भागलपुर जिले के पश्चिमी हिस्से में एक मोहल्ला है जिसको अपना नाम संभवतः चंपा नामक एक छोटी सी नदी से प्राप्त हुआ है | हालांकि पिछले तीन दशकों से यह नदी ऐसी स्थिति में पहुंच गई है कि इसे स्थानीय लोगों द्वारा 'नाला' कहा जाने लगा है। यहां तक कि अब प्रशासन भी इस नदी के लिए 'नाला' शब्द का प्रयोग करता है। विदित हो कि भारत के कई शहरों में छोटी नदियों के मृतप्राय होने का सिलसिला लगातार जारी है । कालांतर में कई नदियाँ धीरे धीरे नाले के रूप में बदल रही हैं। यह आख्यान इस तरह के बदलाव के क्रम को एक ख़ास उदहारण के माध्यम से समझने का प्रयास है कि किस तरह एक नदी (चंपा), 'नदी' से 'नाला' बन गई ?
मेरे लिए भागलपुर एक नई जगह है क्योंकि मैंने चार साल पहले ही यहां के विश्वविद्यालय को अपने नए कार्यस्थल के तौर पर ज्वाइन किया है । पानी की राजनीति में मेरी डेढ़ दशक लम्बी शोध रुचि के कारण नवंबर 2019 में एक हिंदी समाचार पत्र द्वारा चलाए जा रहे अभियान 'कहां गुम हो गई चंपा' के प्रति मुझे एक स्वाभाविक उत्सुकता हुई। साथ ही क्रमशः इस विषय पर अखबार की रिपोर्ट के बाद इस आख्यान में बदलाव पर शोध करने में दिलचस्पी भी जगी।

इस लेख को मूलतः अंग्रेजी में तीन ब्लॉग के रूप SANDRP नामक संस्था की वेबसाइट के लिए 2020 में लिखा गया था । इसका उद्देश्य सामान्य रूप से नदियों अर्थात जल निकायों के माध्यम से शहरों के इतिहास को समझने के क्रम में भागलपुर शहर के इतिहास को समझने के तौर पर भी देखा जा सकता है। इसके माध्यम से हम लोग छोटी नदियों के समक्ष आने वाली समस्याएं, नदी के कायाकल्प की संभावनाएं, आदि को समझने का प्रयास करेंगे। आलेख का यह हिस्सा भागलपुर क्षेत्र के लिए चंपा नदी के महत्व पर ध्यान केंद्रित करेगा ।

अपने रेशम उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है और इसे बिहार का रेशम शहर भी कहा जाता है | जबकि चंपानगर क्षेत्र इसके बाहरी इलाके में एक जैन मंदिर और कई घरों में कपड़ा दुकानों के समूह के लिए जाना जाता है। मुस्लिम ,जैन ,बंगाली आदि समुदायों की बड़ी उपस्थिति के साथ क्षेत्र की सामाजिक संरचना विविधता पूर्ण है। गंगा नदी के तट पर स्थित भागलपुर में सांस्कृतिक समन्वय की एक समृद्ध परंपरा है | पूरे शहर में आप कई मस्जिद, मंदिर (जैन व हिंदू भी) चर्च व गुरुद्वारे को भी देख सकते हैं। यह एक छोटा लेकिन काफी पुराना शहर है और इसका महत्व उस क्षेत्र में शिक्षा के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक केंद्र होने में है। पिछले एक-डेढ़ दशक में, यह शहर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं के कोचिंग संस्थानों के लिए एक हॉटस्पॉट के रूप में उभरा है। शहर काफी घनी आबादी वाला है और भारत के कई अन्य छोटे शहरों की तरह यहाँ कचरा प्रबंधन प्रणाली बहुत खराब है। शहर में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के अभाव के साथ ही अधिकांश क्षेत्रों में खुली नालियां हैं और बरसात के मौसम में जल जमाव एक नियमित समस्या है।

कभी-कभी शहरों के निर्माण का तात्पर्य वहाँ की नदियों को क्रमशः नष्ट करना होता है[i]। अधिकांशत:- लगातार बढ़ती जनसंख्या, साथ ही बढ़ता औद्योगिक प्रदूषण, बांधों और डायवर्सन का निर्माण और ऐसे कई अन्य कारक नदियों की उपेक्षा का कारण बनते हैं। नदियां जिन्हें लंबे समय से दुनिया के अधिकांश हिस्से में साझी संपत्ति (कॉमन्स) माना जाता रहा है, उस अवधारणा में पिछले दशकों में बड़े पैमाने पर बदलाव आया है[ii]। इन दिनों कचरा डंप करने की जगह में तब्दील नदियों के किनारे ऐसे ही नजारे भारत में बेहद आम दृश्य है। संयोगवश, चंपा के किनारे ऐसे नजारे की साक्षी मेरे साथ मेरी पांच साल की बेटी भी बनी । हालाँकि, मुझे उसके प्रश्नों की श्रृंखला के उत्तर देने में बहुत कठिनाई हुई मसलन- लोगों ने यहां कचरा क्यों डाला है? क्या नदी ऐसी दिखती है? और भी कई जटिल प्रश्न। उसके लिए नदियों को इतने करीब से देखने का यह पहला अनुभव था। हालांकि, नदी के किनारे रहना निश्चित रूप से हम दोनों के लिए सुखदायक नहीं था (कुछेक समस्याओं का नाम लूँ तो वहाँ फैली भीषण दुर्गंध, प्लास्टिक व् कचरे का ढेर, कचरे में बचा हुआ भोजन ढूंढती हुई गाय, इत्यादि)। ऐसे में एक दशक से अधिक समय से पानी पर एक शोधकर्ता के रूप में और हाल ही में 'रिवर्स एज कॉमन्स' (साझी संपत्ति के तौर पर नदियाँ) के विचार की खोज करते हुए, मैं एक उलझन भरी मन:स्थिति से गुजर रही थी।

काका कालेलकर के शब्दों में, "प्रत्येक नदी एक संस्कृति का प्रवाह है। प्रत्येक की अपनी-अपनी महानता है। भारतीय संस्कृति की एक विशेषता इस विविधता में से एकता का निर्माण करना है। इसलिए हम सभी नदियों को समुद्र की पत्नियाँ मानते हैं। सागर का सबसे प्रतिष्ठित पर्यायवाची शब्द सरितपति, जो नदियों का पति है। इसे यह गौरव इसलिए दिया गया है क्योंकि सभी नदियाँ अपना पवित्र जल समुद्र में प्रवाहित करती हैं। इसलिए, हम कहते हैं सागरे सर्व तीर्थानि (समुद्र परम पवित्र स्थल है)"[iii]।

उन्होंने पचास साल पहले ये शब्द लिखे थे और तब से संस्कृति के प्रवाह के रूप में नदी के अस्तित्व से अब कचरा डंप करने की जगह के रूप में नदियों के किनारों का लोग उपयोग करने लगे है। यह सौगात हमें विशेष रूप से 'विकास' (डेवलपमेंट) और 'योजना' (प्लानिंग) के परिणामस्वरूप मिला है। मैं इन दो शब्दों/अवधारणाओं का उपयोग इसलिए कर रही हूं क्योंकि इन दोनों ने भारत में नीति निर्माण को प्रमुख रूप से आकार दिया है और SANDRP पर नदियों की अवधारणा पर मेरा एक अन्य लेख उस मुद्दे पर प्रकाश डालता है। यहाँ इसके विस्तार में जाना संभव नहीं है।

भारत के एक विख्यात विद्वान जयंत बंद्योपाध्याय लिखते हैं, "लोग नदियों को केवल घन मीटर पानी के रूप में देखते हैं जिसे बांध कर मोड़ दिया जाता है, लेकिन नदियों को जटिल पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में समझने की आवश्यकता है - संभवतः भूमि पर जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र। बढ़ती जागरूकता के बावजूद भी नदियों के प्रति एक संकीर्ण इंजीनियरिंग दृष्टिकोण न्यूनीकरणवादी है, नदियों के बारे में एक अधिक समग्र धारणा अभी तक सामने नहीं आई है"[iv]|

इसी तरह, एक अलग संदर्भ में, कुंतला लहरी दत्त[v] लिखती हैं कि नदियों का सामाजिक और ऐतिहासिक निर्माण उनकी पहचान को समस्याग्रस्त बनाता हैं। उनका तर्क है कि नदियाँ 'अवतरित संस्थाएँ' हैं जिन्हें मानचित्र पर देखा, महसूस किया, छुआ और खोजा जा सकता है| और एक 'संसाधन'

के रूप में, हम नदियों का दोहन और नियंत्रण करके उनका सर्वोत्तम उपयोग करना चाहते हैं। हिमांशु ठक्कर का तर्क है कि 'नदी एक जटिल और सुंदर प्रणाली है जो अपने रास्ते में कई चीजें कई आयामों से गुजरती है'[vi]। यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि भारत में नदियों की दयनीय स्थिति कई अन्य समस्याओं मसलन भूजल में गिरावट, जैव विविधता का विनाश और लाखों लोगों की आजीविका का विनाश, आदि को बढ़ावा देता है।

चंपा नदी में अब बहुत कम पानी है लेकिन चम्पानगर इलाके में इस पर बने पुल की लंबाई से ऐसा मालूम होता है कि किसी समय पर इसमें काफी अधिक पानी रहता होगा। 'नाला' शब्द का प्रयोग प्रशासन द्वारा पहली बार 1960 के दशक के अंत में किया गया था[vii]। तब से यह शब्द धीरे-धीरे आम बोलचाल का हिस्सा बन गया। सेवानिवृत सरकारी कर्मचारी व 6 दशकों से अधिक समय से चंपानगर के निवासी श्री सुब्रत आचार्य के साथ लंबी बातचीत में मुझे नदी व शहर के बारे में कई जानकारियां मिली। उन्होंने भागलपुर के समृद्ध अतीत को साझा किया जिसे महाभारत के दिनों में अंग प्रदेश कहा जाता था और कर्ण (पांडवों का सौतेला भाई) जिसे सूतपुत्र भी कहते है, के बारे में कहा जाता है कि उसने इस क्षेत्र पर शासन किया था और अपने राज्य की सुरक्षा के लिए उसने चंपा नदी की किलेबंदी की थी। लेख के अगले हिस्से में, मैं भागलपुर शहर व चम्पा नदी के आपस में जुड़े इतिहास के बारे में लिखूंगी।

अंग प्रदेश के समय की चंपा 'नदी' से लेकर भागलपुर के चंपा 'नाला' बनने तक की यात्रा

लेख के इस हिस्से का शीर्षक अनुपम मिश्र के लेखन 'यमुना की दिल्ली'[viii] से प्रभावित है जिसमें वे एक शहर के लिए नदी के महत्व व समय बीतने के साथ-साथ दोनों के बदलते समीकरण के बारे में बताते हैं | जैसा कि लेख के पिछले भाग में उल्लेख किया गया है, मेरा लेखन चंपा नदी नामक एक जल निकाय के आसपास स्थित भागलपुर के इतिहास का पता लगाने का एक प्रयास है | इसी सन्दर्भ में जरा शहर के अतीत पर नजर डालते हैं। कहा जाता है कि महाभारत के दिनों में, कर्ण ने अंगप्रदेश नामक इस क्षेत्र पर शासन किया था, पुरातत्वविदों को इस क्षेत्र में कुछ कलाकृतियाँ[ix] मिली हैं। हालाँकि, इसके विवरण में न जाकर मैं केवल इस नदी के ऐतिहासिक महत्व पर ध्यान केंद्रित करना चाहती हूँ। मैं तीन बिंदुओं पर प्रकाश डालना चाहूंगी - पहला, नदी के चारों ओर किलेबंदी का उपयोग कर्ण के राज्य की सुरक्षा के लिए किया गया था, इसलिए आंशिक रूप से नदी द्वारा सुरक्षा सुनिश्चित की गई थी; दूसरा, उन दिनों नेविगेशन एक महत्वपूर्ण घटक था क्योंकि नौकाओं का उपयोग परिवहन के साधन के रूप में किया जाता था, और तीसरा व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए भी नदियों का उपयोग व्यापार मार्ग के रूप में किया जाता था। मुझे बताया गया कि भागलपुर में रेशम उत्पादन का इतिहास कई सौ साल पुराना है और इसे अन्य देशों में निर्यात किया जाता था[x]। यहां तक कि दैनिक जागरण की रिपोर्ट में भी ऐसी झलक दिखी।

इस क्षेत्र में विषहरी माता नामक एक स्थानीय देवी (एक देवी जो किसी को साँप के काटने पर साँप का जहर उतारने की शक्ति रखती है, उन्हें भगवान शिव की बेटी कहा जाता है) बहुत प्रसिद्ध है और

विषहरी पूजा नामक एक त्योहार भी मनाया जाता है। मैं संक्षेप में बाला-बिहुला की कहानी[xi] और इन देवी और चंपा नदी के साथ इनके आंतरिक संबंध को साझा करती हूं। एक बार की बात है चांदो सौदागर (व्यापारी) और बासु सौदागर नाम के दो दोस्त थे। चांदो भगवान शिव का प्रबल भक्त था लेकिन विषहरी माता चाहती थी कि वह उनकी पूजा करे जिसके लिए चांदो सौदागर तैयार नहीं था। परिणामस्वरूप, देवी क्रोधित हो गईं और चांदो के सात पुत्रों की सांप के काटने से मृत्यु हो गई। अब बाला नाम का सिर्फ एक बेटा बचा था और बिहुला उनके दोस्त बासु की बेटी थी। दोनों दोस्तों ने अपने बेटे और बेटी की आपस में शादी कर दी और अपने बेटे बाला को सांप के काटने से बचाने के लिए चांदो ने चंपा नदी के पास लोहे और बांस का एक घर बनवाया और उसमें कोई छेद नहीं छोड़ा। हालाँकि, किसी तरह कीड़े के रूप में एक साँप उस घर में घुस गया और साँप के काटने से बाला की भी मृत्यु हो गई। तब बिहुला अपने पति की जान बचाने के लिए भगवान शिव और विषहरी माता के पास गई[xii]। कहा जाता है कि चंपानगर वह क्षेत्र है जहां चांदो और बासु सौदागर रहते थे। आज भी यह कहानी इस क्षेत्र में बहुत मशहूर है और इसका जुड़ाव मंजूषा कला के पुनरुद्धार से भी जुड़ा है।

लोक कला के रूप में मंजूषा को इस क्षेत्र की विरासत माना जाता है। भागलपुर और इसके आस-पास के क्षेत्रों को कभी-कभी आज भी (इसके गौरवशाली अतीत को याद करने के लिए) अंगप्रदेश कहा जाता है। इस क्षेत्र की भाषा अंगिका है और कई नागरिक समाज संगठन इस भाषा को बढ़ावा देते हैं। मुझे हिंदी में अंगचम्पा, अंगमहिमा आदि नाम की कुछ स्थानीय पत्रिकाएँ भी मिलीं। पिछले कुछ वर्षों में, उपेन्द्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान उद्योग विभाग (बिहार सरकार की एक इकाई) की मदद से हर साल भागलपुर में मंजूषा महोत्सव का आयोजन किया जाता है। फरवरी 2020 में इसका आयोजन सैंडिस कंपाउंड में किया गया था[xiii],और मुझे उस महोत्सव का भ्रमण करने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसमें फैशन शो, हस्तशिल्प उत्पादों की बिक्री आदि जैसे घटक शामिल थे| हालांकि मुझे लगता है कि ऐसे मंचों का उपयोग सामान्य तौर पर स्थानीय लोगों के बीच जल निकायों की खराब स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है व विशेष रूप से मरती हुई चंपा नदी के लिए।

यह सन्दर्भ मुझे भागलपुर विश्वविद्यालय के विशाल परिसर की भी याद दिलाता है[xiv] और यह बताना दिलचस्प है कि इसमें विभिन्न आकार के तीन तालाब हैं। भैरवां[xv] नामक एक तालाब आकार में काफी बड़ा है और मैं अपने कार्यस्थल पर जाते समय सप्ताह में छह दिन इसे पार करती हूं। यहाँ आप भैंसों को नहाते हुए और सारस को तालाब में तैरते हुए देख सकते हैं। दो अन्य तालाब आकार में इतने बड़े नहीं हैं, लेकिन परिसर की हरियाली और जैव विविधता को बढ़ाते हैं। मैंने सैर के दौरान कई प्रकार के पक्षियों व तितलियों को देखा है | मेरी बेटी के साथ पक्षी -दर्शन का पिछले 3-4 वर्षों का नया शौक, द्वारका (नई दिल्ली) से शुरू होकर अब भागलपुर में भी जारी है। नए पक्षियों को देखना प्रकृति के साथ हमारे जुड़ाव में विस्मय का एक तत्व जोड़ता है, लेकिन साथ ही उनके नाम को जानने की जिज्ञासा मेरे लिए एक होमवर्क बन जाता है।

चंपा नदी पर अपने शोध के दौरान मुझे कई दिलचस्प किस्से सुनने को मिले। मसलन इस क्षेत्र को पहले चंपापुरी कहा जाता था यानी नदी के आसपास का क्षेत्र। साथ ही चंपा एक फूल का नाम भी है

जिसमें एक ख़ास सुगंध होती है। लोगों का कहना है कि इस नदी के पानी की गुणवत्ता ने कतरनी चूड़ा (पोहा) और कतरनी चावल में सुगंध जोड़ दी है। रेशम उत्पादन के अलावा, भागलपुर कतरनी चूड़ा और जरदालु आम के लिए भी प्रसिद्ध है और कई अन्य दर्शनीय स्थलों के लिए भी। शहर के निर्माण और इसके जलाशयों के पुनर्निर्माण के जुड़ाव की कहानी भागलपुर और चंपा पर भी लागू होती है।

चंपा नदी का नाले में पतन रातो रात नहीं हुआ। पिछले कुछ दशकों के अंतराल में, जब भागलपुर शहर 'आधुनिक' होने की ओर कदम बढ़ा रहा था[xvi] तब इसकी चंपा नदी धीरे-धीरे एक नाले में रूपांतरित हो रही थी। मुझे इश्तेयाक भाई के शब्द याद आ रहे हैं, 'पहले नदी की आत्मा मर जाती है, फिर धीरे-धीरे उसका शरीर'[xvii] । दूसरी तरफ काशीनाथ त्रिवेदी ने कहा है, 'नदी का धर्म है कि वह बहती रहे'[xviii] । जेन जैकब्स अपनी पुस्तक 'द लाइफ एंड डेथ ऑफ ग्रेट अमेरिकन सिटीज' में लिखती हैं, 'वर्तमान शहर निर्माण का आर्थिक तर्क एक धोखा है। नियोजित शहर निर्माण के साधन उतने ही दयनीय हैं जितना कि साध्य।'[xix] भागलपुर कोई अपवाद नहीं है। इस लेख का अगला और आखिरी भाग इस नदी के पुनर्जीवन की संभावनाओं पर केंद्रित है।

चंपा नदी में जीवन की पुनर्स्थापना

क्या यह महज एक संयोग है कि मैं चंपा नदी पर अपने तीन-भाग के लेखन का यह आखिरी खंड तब लिख रही हूं जब अभूतपूर्व कोविड-19 महामारी के बीच चल रहे लॉकडाउन के कारण, न केवल पूरे भारत में बल्कि दुनिया भर में नदियां अपेक्षाकृत साफ हो गई हैं। कई विद्वान और पर्यावरणविद् इसे 'प्रच्छन्न वरदान' (बून इन डिसगाय्ज़) कह रहे हैं और हमसे इसे आसपास की प्रकृति के साथ मनुष्य के रिश्ते को फिर से जोड़ने के अवसर के रूप में लेने के लिए कह रहे हैं। जैसा कि मैं लेख में पहले कह चुकी हूं, उसे संक्षेप में दोहराऊं तो नदियां महज जलाशयों से कहीं अधिक हैं और प्रत्येक नदी के आसपास एक नहीं बल्कि कई कहानियां हैं। ये कहानियां इस बारे में हैं कि वे अस्तित्व में कैसे आयीं, उनकी विशेषताएं क्या हैं और भी बहुत कुछ।

जब मैंने पहला भाग लिखा तो अगली सुबह मुझे कृष्ण गोपाल व्यास सर का ई मेल मिला। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ, जब उन्होंने चंपा नदी पर काम करने की मेरी इच्छा के लिए अपना आशीर्वाद और शुभकामनाएं भेजीं। उन्होंने मुझे चंपा नदी पर अपना लेख भी मेल किया था[xx] जो इंडिया वॉटर पोर्टल पर प्रकाशित हुआ था। बाद में मुझे एहसास हुआ कि यह ईमेल उन्हीं व्यक्ति का था जिनके बारे में मैंने दैनिक जागरण में पढ़ा था, प्रसिद्ध भूविज्ञानी के जी व्यास, जिन्होंने दिसंबर, 2019 में चंपा नदी का दौरा किया था। उन्हें मेरा लेख पसंद आया इससे मुझे काफी संतुष्टि मिली। 'भागलपुर की चंपा: आस अभी बाकी है' शीर्षक से उनका तीन पेज का लेखन चंपा पर नए शोधकर्ता के रूप में मेरे लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

मैं चंपा नदी पर कुछ बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करना चाहती हूं जो मैंने व्यास सर के लेखन और उनके साथ दो लंबी टेलीफोन पर बातचीत से एकत्र किए हैं। वास्तव में, मुझे यह साझा करना चाहिए कि चंपा की इस यात्रा में मुझे विभिन्न तरीकों से कई लोगों से लाभ हुआ था[xxi] और रानी सहाय द्वारा

अपनी टेड टॉक साझा करने के लिए उनके काम का विशेष उल्लेख की आवश्यकता है[xxii]। उनकी संस्था "पीपल: ए रेजिलिएंस लैब" नदी के किनारे रहने वाले लोगों के साथ बहुत उपयोगी काम करती दिख रही है। यह संगठन चंपा नदी को बचाने के क्रम में 'रन फॉर रिवर', नुक्कड़ नाटक जैसे कार्यक्रम आयोजित करके स्थानीय लोगों में जागरूकता फैला रहा है। पीपल संस्था जैविक खेती, प्राकृतिक रंगों, अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा दे रहा है और साथ ही जैविक साबुन और बीज राखी जैसे उत्पाद भी बना रहा है जो लड़कियों और महिलाओं को आजीविका प्रदान करता है। हाल ही में इस संगठन ने बिहार के मुख्यमंत्री को अपना प्राकृतिक सीवेज उपचार संयंत्र (एसटीपी) प्रदर्शित किया और अब वे इसे चंपा के तट पर एक पंचायत में लागू करने की प्रक्रिया में हैं।

28 किमी लंबी नदी चंपा बांका जिले से निकलती है और इस क्षेत्र में इसके कई नाम हैं। वैदिक काल में इसे मालती कहा जाता था और इसे सदानीरा (हमेशा बहने वाली) नदी माना जाता है। उद्गम पर इसे चानन कहा जाता है और बाद में बिरमा नामक स्थान के पास चानन और अंधरी नामक दो धाराओं में विभाजित हो जाती है। चानन अभी भी बह रही है लेकिन अंधरी लगभग सूख चुकी है और इसके किनारे के ग्रामीण लोग सिंचाई, मछली पकड़ने आदि के लिए इसके पानी पर निर्भरता के कारण अब पानी की कमी से पीड़ित हैं।

चंपा गंगा बेसिन की एक नदी है और यह कई शाखाओं और उपशाखाओं में विभाजित है। नदी को पुनर्जीवित करने के लिए हमें नदी को उसके सभी आयामों में समझना होगा। हमें भी नदी से जुड़े टुकड़ों पर नजर डालने की बजाय समग्रता में नदी की समस्याओं पर गहराई से विचार करने की जरूरत है। अपने उद्गम स्थल पर, अर्थात चानन नदी का पानी अभी भी साफ है और इसका स्वाद भी अच्छा है और यही कारण है कि भूविज्ञानी के जी. व्यास जी इसके पुनरुद्धार को लेकर काफी आशान्वित हैं।

इस नदी और कई अन्य नदियों की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक इसके किनारे हो रहा अवैध और अस्थिर रेत खनन है। जब रेत को नदियों से वार्षिक पुनःपूर्ति से अधिक मात्रा में और मशीनों का उपयोग करके ले जाया जाता है, तो यह नदी और उसके आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करता है। व्यास जी ने रेखांकित किया कि अत्यधिक भूजल दोहन काफी स्पष्ट है और जलभृतों (एक्विफर्स) को रिचार्ज करने की आवश्यकता है। यह एक क्षेत्रीय समस्या है और इसके क्षेत्रीय समाधान की आवश्यकता है। ये समाधान हैं, इस क्षेत्र के तालाबों का पुनरुद्धार करना, नदियों, नालों और जल निकायों पर अतिक्रमण को रोकना साथ हीं जलग्रहण क्षेत्र और उसकी जल धारण करने, रोकने और पुनर्भरण करने की क्षमता का विनाश भी रोकना होगा।

ऐसा लगता है कि हम एक विरोधाभासी स्थिति में फंस गए हैं, जहां हमारे पास भारत में नदी पुनरुद्धार के कुछ उदाहरण हैं, लेकिन पूरे देश में कई छोटी नदियां और झीलें क्षतिग्रस्त हो रही हैं। वे कूड़ा कचरा का डंपिंग ग्राउंड बन रही हैं, उनके किनारों का अतिक्रमण हो रहा है। फलस्वरूप, वे सूख रही हैं और प्रदूषित हो रही हैं। ऐसे में नदी पुनर्जीवन की अवधारणा का चलन बढ़ रहा है। आम तौर पर भारत में दो सफल कहानियों का उल्लेख किया जाता है- पहला, सामुदायिक भागीदारी की मदद

से पंजाब में काली बेन नदी के पुनरुद्धार का जिसका श्रेय संत सीचेवाल को दिया गया था[xxiii] और दूसरा, राजेंद्र सिंह के सक्षम नेतृत्व में तरुण भारत संघ (टीबीएस, राजस्थान) ने अरवरी नदी को पुनर्जीवित किया[xxiv]। हाल के दिनों में, जग्गी वासुदेव की 'रैली फॉर रिवर' सोशल मीडिया पर काफी विवादास्पद हो गई और इसके समर्थकों और विरोधियों के बीच यह बहस ध्रुवीकृत हो गई, हालांकि माना जाता है कि यह नदी पुनरुद्धार का उदाहरण नहीं है। बिहार सरकार राजेंद्र सिंह के साथ मिलकर काम करती है और उन्होंने नवंबर, 2019 में भागलपुर में चंपा नदी का दौरा भी किया था[xxv]। उन्होंने नदी कायाकल्प की सफलता के लिए सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता पर जोर दिया।

वर्तमान से हटकर, आइए मार्च 2017 के एक ऐतिहासिक फैसले को याद करें जब उत्तराखंड के उच्च न्यायालय ने गंगा और यमुना नदियों को कानूनी इकाई का दर्जा दिया था, जिस पर जुलाई 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी थी। इन वर्षों में जमीनी स्तर पर शायद ही कुछ बदला है । अपने एक अन्य लेख[xxvi] में मैंने इस बारे में लिखा है जिसमे उल्लिखित है कि 1985 के बाद से गंगा पर कई योजनाएं और नीतियां क्यों कुछ खास हासिल नहीं कर पाईं। यहां तक कि नदी पुनर्जीवन के विचार का प्रयोग अक्सर केंद्रीय सरकार द्वारा किया जाता रहा है। साथ ही बिहार सरकार द्वारा, 'निर्मल' (शुद्ध/स्वच्छ), 'अविरल' (हमेशा बहने वाला) जैसे शब्दों का उपयोग महज़ नारे ही प्रतीत होते हैं। एक स्पष्ट रोडमैप गायब है और पहले राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण (एनजीआरबीए) और अब राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) जैसे संस्थानों की स्थापना के बाद भी हम शायद ही कुछ हासिल कर सके।

चंपा नदी के मामले को एक सूक्ष्म उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि भारत की कई नदियाँ इसी तरह की चुनौतियों का सामना कर रही हैं जैसे कि नदी क्षेत्र का अतिक्रमण, रेत खनन, औद्योगिक और शहरी प्रदूषकों का डंपिंग, चैनलाइज़ेशन और अन्य अपशिष्ट आदि। भागलपुर और उसके आसपास की नदियों के बारे में और अधिक जानने के लिए, मैंने अपने छात्रों के साथ मिलकर 'अपनी नदी को जानें'[xxvii] (नो योर रिवर्स) नाम से एक शिक्षण परियोजना शुरू की है। राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर के छात्र पर्यावरण शिक्षा पर अपने अनिवार्य पेपर के हिस्से के रूप में एक समूह गतिविधि के रूप में 'नदी प्रोफाइल' बनाने की कवायद में लगे हुए हैं। हम इसे तीन चरणों में करने का इरादा रखते हैं- पहला, उपलब्ध द्वितीयक साहित्य (सेकेंडरी सोर्स) से नदियों पर डेटा एकत्र करना; दूसरा, इन नदियों के किनारे स्थित कुछ गांवों/स्थानों का पता लगाना और उनका दौरा करना; और तीसरा, प्रदूषण, जैव विविधता, नदी क्षेत्र का अतिक्रमण, रेत खनन, कम प्रवाह आदि जैसे कुछ मुद्दों पर समय के साथ नदियों में होने वाले परिवर्तनों को समझने के लिए लोगों के साथ बातचीत करना।

निक मिडलटन की पुस्तक 'रिवर्स'[xxviii] नदियों की अंतरविषयी (इंटरडिसिप्लिनरी) समझ के लिए बहुत उपयोगी है। यह पाठ दुनिया भर में नदियों के मार्ग को आकार देने में धर्म, मिथकों और आख्यानों के साथ-साथ विज्ञान और आधुनिकता की भूमिका पर प्रकाश डालता है। इस क्षेत्र की ऐतिहासिक नदी के रूप में चंपा के मामले में, हम देख सकते हैं कि दैनिक जागरण के 'कहां गुम हो गई चंपा' अभियान

के कारण इसने नए सिरे से ध्यान आकर्षित किया है। संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि नदियाँ हमारे पर्यावरण का हिस्सा होने के नाते हमें उन्हें बचाने के लिए नहीं कह रही हैं बल्कि हम खुद को बचाने के लिए उस दिशा में सोचने के लिए मजबूर हैं। नदियों को जीवित प्राणी के रूप में पहचानना[xxix] और खुद को नदियों से जोड़ना शायद हमारे शुरुआती कदम हो सकते है। जैसा कि सोपान जोशी ने एक अनौपचारिक बातचीत में कहा उसे उद्धृत करते हुए कहा जाए तो, 'नदियों का अपना धर्म है, जो हमारे धर्म से बहुत पुराना है'[xxx]। चंपा पर इस शोध ने मुझे न केवल नदियों को बहुत अधिक जानने में बल्कि मनुष्य के रूप में हमारे अस्तित्व में नदियों के सार के बारे में अधिक गहराई से सोचने का भी अवसर दिया है।

---

[i] I borrow this line of argument from Arturo Escobar as in his famous book *Encountering Development,* he makes a case for making and unmaking of third world.

[ii] Shree, Ruchi (2018), **Rivers as Commons: Reality or Myth?,** as guest blog on SANDRP website**,** available at https://sandrp.in/2018/03/14/rivsers-as-commons-reality-or-myth/

[iii] Lal, Amrith (2018), 'My Friend, the River', The Indian Express, 25 November. This piece is about a unique celebration of the river Chandragiri in Kerala's Kasargode. The local people have compiled a volume titled *Jeevanarekha.* Lal has mentioned about Kaka Kalelkar's (noted Gandhian) magnificent work on waterbodies *Jeevanaleela* (1964) and his view on rivers.

[iv] Bandopadhyay, J. (2018), 'Why we need a new perspective on rivers', July 25, available on https://www.orfonline.org/research/why-we-need-a-new-perspective-on-rivers/

[v] Dutt, Kuntala Lahiri (2010), 'Imagining Rivers', *EPW*, Vol. 35, No. 27, pp. 2395-2400.

[vi] Thakkar, Himanshu (2015), 'The Narmada and Other Rivers of Gujarat' in Ramaswamy Iyer (ed.) *Living Rivers, Dying Rivers*, OUP, New Delhi, pp. 339-363. To mention his full definition, 'a river is not just a channel carrying freshwater, but a hydrological, geomorphic, ecological, biodiversity-rich, landscape-level system that serves as a key part of the freshwater cycle, balancing a dynamic equilibrium between snowfall, rainfall, surface water, and groundwater, and providing a large number of social and economic services to the people and ecosystem all along its watershed'

[vii] As told by a local resident in a conversation about the river Champa and history of the city named Bhagalpur. I got to know about the story of *Bala-Bihula* through which the *Manjusha* art became popular.

[viii] Mishra, Anupam (2012), 'Yamuna ki Dilli', *Landscape*, No. 35, April-June, pp. 30-34; This writing in Hindi is a photo essay and one-page translation in English is done by Sopan Joshi, 'Yamuna's Delhi' on p. 35.
[ix] As I was told by Mr. Subir Acharya, a local resident of Champanagar (details in the last part).

[x] This point was highlighted by Rani Sahay, who is actively working for the rejuvenation of River Champa through her organization named Peepal. I will write more about it in the next part on Prospects of River Rejuvenation.

[xi] Some people also call it the story of *Bihula-Vishahri*.
[xii] I am not sure about the time period of this narrative. It is a very long story and not possible for me to go into the details but those interested may read http://www.manjushakala.in/manjusha-art/story-of-bihula-bishari/
[xiii] A landmark in Bhagalpur, this a huge ground named after a British mayor. It was originally called Sandy's compound. For details see https://en.wikipedia.org/wiki/Sandish_Compound

[xiv] Myself as part of the University as a teacher of Political Science with a multidisciplinary interest often feel sad about the current status of the campus. It is '*a green campus but certainly not clean campus'*. I have floated the idea of making a Nature Club in the University in a programme organized by *Dainik Jagran* in Gandhian Studies Centre of TMBU in January, 2020. I was told that it came in the newspaper on 30th Jan, 2020 though I did not get a chance to see the same.

[xv] I am yet to explore its history. I was told by a student that this pond is part of TNB College, a unit of TMBU. The university has many mango trees and also a large tract of land which is leased to the farmers for the production of vegetables and wheat.

[xvi] 'Modern' is a ubiquitous word and has different context-specific meanings. 'Modernity' is one of the most researched themes in social sciences and the arrival of concepts such as multiple modernities and alternative modernity have added nuances to it.

[xvii] Ishteyaque Ahmad is a civil society activist based in Patna and works with an organization named Pravah.

[xviii] I read this line more than a decade back on the first page of Amita Baviskar's book *In the Belly of the River: Tribal Conflicts over Development in Narmada Valley* (Oxford University Press, 1995). Somehow this line has stayed in my deep consciousness.

[xix] Sopan Joshi (2013), Sheila ki Dilli, available at https://in.news.yahoo.com/sheila-ki-dilli-054110650.html. For those interested in learning about the flaws in urban planning in India, this writing could be very useful.

[xx] K G Vyas (2019), *Bhagalpur ki Champa: Aas abhi baki hai'*, https://hindi.indiawaterportal.org/content/bhaagalapaura-kai-camapaa-asa-abhai-baakai-haaie/content-type-page/1319335077

[xxi] To name some of them-Madhbendra ji (reporter of Dainik Jagran) to have shared many relevant details of the newspaper, Prof. Sunil Chaudhary (PG Department of Botany, TMBU) for his insights on rivers of this region, Kishore Jaisawal ji is a social worker based in Munger and runs an NGO called SWARD i.e. Society for Watershed and Rural Development (he shared the link of a documentary on Angpradesh available on YouTube and also gave me the contact details of artists, journalists, etc. working on rivers in Bihar) , Pankaj Malviya ji (a journalist and also a co-ordinator of Jal Jan Jodo Abhiyan of Rajendra Singh).

[xxii] Rani Sahay is quite passionate about her project and her enthusiasm does give a sense of hope. One may see her TED talk at https://www.ted.com/talks/rani_sahay_building_a_sustainable_community_around_dirt To know more about Peepal, one may visit https://www.picuki.com/profile/peepaltheresilience

[xxiii] To know more about it, one may read https://www.hindustantimes.com/punjab/eco-warrior-sant-seechewal-a-ray-of-hope-for-ganga-revival/story-OR4tSAOI8bsOhU2QZaNptO.html

[xxiv] https://scroll.in/article/715676/video-how-indias-water-man-first-revived-a-river-and-a-village-in-rajasthan

[xxv] To learn about the differences between Rajendra Singh and Jaggi Vasudev, please read https://www.thenewsminute.com/article/wont-support-rally-rivers-indias-waterman-rajendra-singh-ishas-campaign-73353

[xxvi] Shree, Ruchi (2017), 'Are we serious about our rivers' in The Pioneer (Op-Ed), 30th March, available at http://www.dailypioneer.com/columnists/oped/are-we-serious-about-our-rivers.html

[xxvii] I am thankful to Himanshu Thakkar (SANDRP) for sharing his insights to develop this project.
[xxviii] Nick Middleton (2012), Rivers: A Very Short Introduction, Oxford University Press (OUP).

[xxix] Ashish Kothari and Shristee Banerjee (2016), 'Rivers as Human Rights: We are the River, the River is Us?', *Economic and Political Weekly,* its summary is available on http://www.vikalpsangam.org/article/summary-of-rivers-and-human-rights-we-are-the-river-the-river-is-us/

[xxx] Sopan Joshi is a freelance journalist who has done immense research on themes such as Gandhi, water, sanitation and his book *Jal, Thal, Mal* is a significant text to understand the ongoing '*politics of environment*' (emphasized by the author) and the need to engage with an alternative discourse. His writings could be read at https://mansampark.in/